Purva Mimaansa | Refereed | Peer Reviewed
ISSN: 0976-0237 | Volume 14, Issue September 2023 | Impact Factor 5.320

उत्तराखण्ड में प्रवासियों की जनसांख्यिकीय विशेषताएं: नैनीताल जनपद के सन्दर्भ में

घनानंद पलड़िया
सहायक अध्यापक हिन्दी, राजकीय इंटर कॉलेज जोस्यूड़ा नैनीताल
बी. आर. पन्त
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष भूगोल विभाग, एम. बी. जी. पी.जी. कॉलेज हल्द्वानी, नैनीताल

सारांश

किसी भी क्षेत्र की आर्थिक विकास प्रक्रिया उस क्षेत्र की जनसंख्या के स्थानिक स्वभाव से संचालित होती है। उत्तराखण्ड के जनसंख्यात्मक विश्लेषण का चिन्ताजनक पक्ष यही है कि पूरे उत्तराखण्ड की 52 प्रतिशत जनसंख्या केवल तराईभाबर में सिमट गयी है। पहाड़ों में पलायन की समस्या इतनी गम्भीर स्थिति में है कि कई गाँव वीरान होते जा रहे हैं। शोध अध्ययन क्षेत्र भाबर में प्रतिदर्श प्रवासी परिवारों में प्रति हजार पुरुषों में 906 महिलाएँ हैं जो समग्र हिमालय (944), उत्तराखण्ड (963) तथा राष्ट्रीय स्तर से कम है। चयनित गाँवों में 62.16 प्रतिशत (1822) जनसंख्या ग्रामीण और शेष 37.84 प्रतिशत (1109) जनसंख्या शहरी क्षेत्रों में निवास करती है। साक्षरता की दृष्टि से चयनित प्रतिदर्श परिवारों में साक्षरता का प्रतिशत 89.76 प्रतिशत है जो उत्तराखण्ड के कुल औसत साक्षरता (78.8 प्रतिशत) से अधिक है। अध्ययन क्षेत्र में अपरिष्कृत जन्मदर प्रति 1000 जनसंख्या पर 11.26 प्रतिशत व्यक्ति है जबकि अपरिश्कृत मृत्युदर प्रति 1000 जनसंख्या पर केवल 6.82 व्यक्ति है।

प्रस्तावना

प्रवास का अभिप्राय व्यक्ति या आबादी का अपने वर्तमान अथवा मूलस्थान को छोड़कर अन्यत्र कम या अधिक समय के लिये अथवा स्थाई रूप से बसने से है। इस प्रक्रिया से मूल (जनन) तथा गन्तव्य क्षेत्रों की आबादी के स्वरूप एवं संरचना में परिवर्तन आता है। जनसंख्या परिवर्तन के अध्ययन में जन्म एवं मृत्यु की तरह प्रवास भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्रवास से किसी भी क्षेत्र की आबादी की संरचना/संगठन में धीरे–धीरे लेकिन बहुत परिवर्तन आ जाते हैं। जनपद नैनीताल के भाबर क्षेत्र में चयनित प्रतिदर्श प्रवासी परिवारों में जनसांख्यिकीय विशेषताओं की दृष्टि से देखें तो भाबर क्षेत्र में स्थायी रूप से प्रवासित हुए प्रवासियों की आयु एवं लिंगानुपात संरचना, जातीय संरचना, परिवार का आकार, प्रवासियों की ग्रामीण एवं शहरी संरचना, प्रवासियों की शैक्षिक स्थिति और प्रजनन एवं जन्म मृत्युदर के स्वरूप का अध्ययन किया गया है। इस शोध पत्र को तैयार करने

में प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ों की सहायता ली गई है।

साहित्य सिंहावलोकन

उत्तराखण्ड में जनसंख्यात्मक पहलुओं पर अध्ययन बहुत कम हुए हैं। इनमें शर्मा (1981), कमलेश कुमार (1983), पन्त (1995, 1996 अ, 1996 ब, एवं 2010), चन्द इत्यादि (1995, 1996, 2016), खनका (1984), खर्कवाल (1993), चाँदना (2014), पन्त आदि 2022 प्रमुख हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य जनपद नैनीताल के पर्वतीय क्षेत्रों से भाबर क्षेत्र में स्थायी तौर पर बसे प्रवासियों की जनसांख्यिकीय विशेषताओं पर प्रकाश डालना है। इसके अन्तर्गत प्रवासियों की आयु एवं लिंगानुपात संरचना, जातीय संरचना, परिवार का आकार, प्रवासियों की ग्रामीण एवं शहरी संरचना, प्रवासियों की शैक्षिक स्थिति और प्रजनन एवं जन्म मृत्युदर के स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है। अध्ययन क्षेत्र में यह प्रवासियों की जनसांख्यिकीय विशेषताओं की स्थिति को स्पष्ट करने वाला पहला शोध कार्य है। यह प्रवास पर अनुसंधान और स्थानीय नीतियों के निर्माण के साथ ही राष्ट्रीय स्तर के क्षेत्र में भी योगदान देगा, ऐसी उम्मीद है।

अध्ययन विधितंत्र

प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ों को प्रस्तुत किया गया है। प्राथमिक आँकड़ों के संग्रहण हेतु अध्ययन क्षेत्र में नैनीताल जिले के पर्वतीय क्षेत्रों से भाबर क्षेत्र में आये हुए स्थायी प्रवासियों का क्षेत्र सर्वेक्षण किया गया है। भाबर क्षेत्र के अन्तर्गत तीन विकास खण्ड हल्द्वानी, रामनगर और कोटाबाग सम्मिलित हैं। सर्वप्रथम नैनीताल जिले में स्थित भाबर क्षेत्र के तीन विकास खण्डों हल्द्वानी, रामनगर और कोटाबाग क्षेत्र के ग्रामीण और शहरी क्षेत्र को लिया गया। तत्पश्चात अध्ययन के उद्देश्य के लिए नैनीताल जिले के मानचित्र के आधार पर तीन विकास खण्डों में से यादृच्छिक निदर्शन (Random Sampling) की सहायता से 10 प्रतिदर्श गाँवों एवं 2 नगरीय क्षेत्रों का चयन किया गया और अन्त में आँकड़े संग्रह के लिए प्रतिदर्श गाँवों में से केवल 520 परिवारों का चयन किया गया जो नैनीताल जिले के पर्वतीय क्षेत्रों से भाबर क्षेत्र में स्थायी रूप से निवास कर रहे थे। प्राथमिक आँकड़ों का संग्रहण गाँवों का चयन कर के प्रश्नावलियों के माध्यम से मुखिया या घर के किसी उत्तरदायी सदस्य के साथ बातचीत करके तथा अन्य प्रविधियों के द्वारा किया गया है। द्वितीयक आँकड़ों के मुख्य स्त्रोत भारतीय जनगणना 2011 हैं।

अध्ययन क्षेत्र

पहले उत्तरप्रदेश और अब उत्तराखण्ड के कुमॉऊमण्डल के जिला नैनीताल की सीमायें उत्तर में अल्मोड़ा, पश्चिम में पौड़ी (गढ़वाल) पूर्व में चम्पावत तथा दक्षिण में उधमसिंह नगर हैं। नैनीताल जनपद 20^{0} उत्तरी अक्षांक्ष से 23^{0} उत्तरी अक्षांक्षों और $78^{0}80''$ पूर्वीदेशान्तर से 82^{0} पूर्वीदेशान्तरों के मध्य विस्तृत है। जनपद नैनीताल उत्तराखण्ड का एक महत्वपूर्ण जिला है, जनपद का भौगोलिक क्षेत्रफल 4251 वर्ग किमी. है। क्षेत्रफल के अनुसार राज्य के तेरह जिलों में इस जनपद का छठा स्थान है। जनपद का भौगोलिक क्षेत्रफल राज्य की कुल भूमिका 7.28 प्रतिशत है। सम्पूर्ण जनपद 8 तहसीलों में विभक्त है– नैनीताल, कोश्याकुटौली, धारी तथा बेताल घाट तहसील पर्वतीय क्षेत्र में तथा हल्द्वानी, कालाढूगी, रामनगर, लालकुऑ तहसील भाबर क्षेत्र में

Purva Mimaansa | Refereed | Peer Reviewed
ISSN: 0976-0237 | Volume 14, Issue September 2023 | Impact Factor 5.320

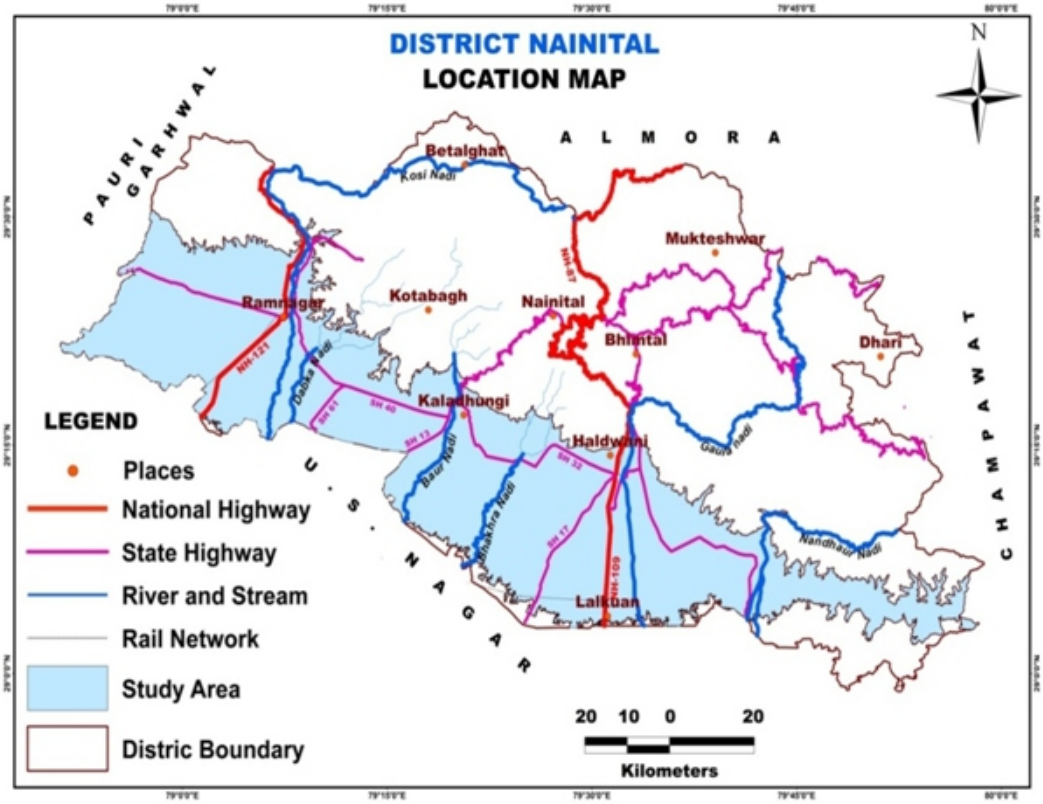

मानचित्रः स्थिति एवं विस्तारोध क्षेत्र में चयनित प्रतिदर्श ग्रामीण और शहरी क्षेत्र का विवरण

तालिका–1.1 जनपद नैनीताल के भाबर क्षेत्र में चयनित प्रवासी परिवारों का विवरण

तहसील का नाम	प्रतिदर्श गाँव/नगरीय क्षेत्र	प्रतिदर्श गाँवों का भौगोलिक विवरण			कुल परिवारों की संख्या	कुल चयनित प्रतिदर्शपरिवारों की संख्या	कुल चयनित प्रतिदर्श परिवारों का प्रतिशत	चयनित प्रतिदर्श परिवारों की कुल जनसंख्या	चयनित प्रतिदर्श जनसंख्या का प्रतिशत
	ग्रामीण क्षेत्र	क्षेत्रफल (वर्ग किमी.)	अक्षांक्ष	देशान्तर					
–	हिम्मतपुरतल्ला	0.71	79.49	29.21	293	47	16.04	286	9.76
	प्रेमपुरलोसानी	0.54	79.48	29.19	214	34	15.89	183	6.24
	हरिपुरतुलाराम	0.34	79.52	29.15	224	18	8.04	108	3.68
	देवलामल्ला	1.14	79.56	29.21	153	22	14.38	126	4.30
	नवाड़ खेड़ा	1.21	79.55	29.22	259	44	16.99	265	9.04
	फतेहपुर	0.89	79.46	29.26	129	22	17.05	128	4.37
रामनगर	छोई	0.53	79.14	29.37	99	25	25.25	145	4.95
	गैबुआ खास	2.28	79.18	29.32	233	40	17.17	227	7.74
कालाढूंगी	कमौला	5.01	79.29	29.28	378	28	7.41	152	5.19
	गुलजारपुररामसिंह	0.95	79.36	29.25	161	35	21.74	202	6.89
शहरी क्षेत्र									
हल्द्वानी	हल्द्वानीतल्ली	1.7	79.51	29.19	1741	105	6.03	587	20.03
	बिठोरिया न. 1	0.61	79.52	29.23	2808	100	3.56	522	17.81
कुल योग		**15.91**			**6893**	**520**	**7.54**	**2931**	**100.00**

स्रोत–क्षेत्र सर्वेक्षण–2019–.2020 एवं भारत की जनगणना, 2011

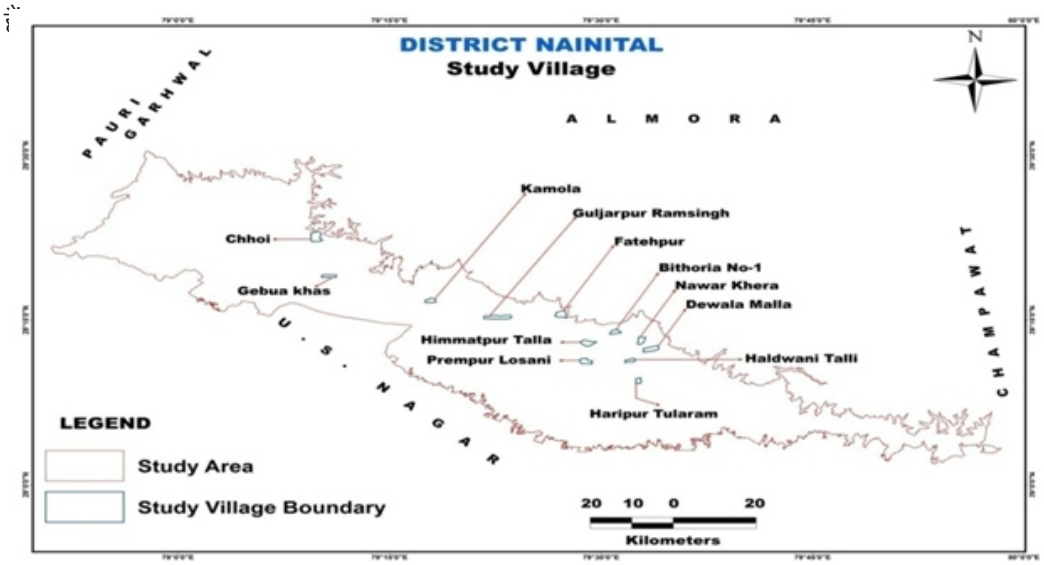

चित्र संख्या 1.2 स्रोत : प्रतिदर्श गांव/नगर क्षेत्र

आयु और लिंगानुपात संरचना

जनसांख्यिकीय संरचना और सामाजिक आर्थिक स्थितियों के अध्ययन में प्रत्येक आयु में लिंग अनुपात को भी महत्वपूर्ण विशेषता माना जाता है। जनसांख्यिकीय विशेषताओं में आयु और लिंगानुपात विकास की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और यह प्रवास की प्रवृत्ति, धारा और प्रतिरूप के कारण तथा परिणाम हैं। इसलिए आयु और लिंग से आबादी की विशेषताओं को समझना आवश्यक लगता है। आयु और लिंगानुपात द्वारा प्रतिदर्श आबादी की संरचना और वितरण को स्पष्ट रूप से निम्नतालिका में दिखाया गया है–

तालिका 1.2 जनपद नैनीताल के भाबर क्षेत्र में प्रवासी प्रतिदर्श परिवारों की जनसंख्या व लिंगानुपात

आयु (वर्ष में)	पुरूष		महिला		कुल		लिंगानुपात
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
0 – 14	392	25.50	342	24.54	734	25.04	872
15 – 29	472	30.71	426	30.56	898	30.64	903
30 – 44	286	18.61	265	19.01	551	18.80	927
45 – 59	211	13.73	192	13.77	403	13.75	910
60+	144	9.37	151	10.83	295	10.06	1048
आयुनहींबताई	32	2.08	18	1.29	50	1.71	....
कुल योग	1537	100	1394	100	2931	100	906

स्रोत–क्षेत्र सर्वेक्षण, 2019–2020

क्षेत्र सर्वेक्षण के आधार पर प्रतिदर्श परिवारों की कुल जनसंख्या 2931 है जिसमें 1537 पुरूष (52.44 प्रतिशत) तथा 1394 महिलाएं (47.56 प्रतिशत) हैं। इसमें 0–14 वर्ष आयुवर्ग में 25.4 प्रतिशत, 15–29 वर्ष के बीच 30.64 प्रतिशत, 30–44 वर्ष के बीच 18.80 प्रतिशत, 45–59 वर्ष के

बीच 13.75 प्रतिशत तथा 60 वर्ष से अधिक आयु वाली 10.06 प्रतिशत जनसंख्या है। शेष 1.71 प्रतिशत लोगों ने अपनी आयु का विवरण नहीं दिया है। तालिका 4.2 से स्पष्ट हो रहा है कि अध्ययन क्षेत्र में प्रतिदर्श परिवारों की आयु संरचना पिरामिड की तरह ही है। आयुवर्ग 15–29 वर्ष के बीच सर्वाधिक जनसंख्या (30.64 प्रतिशत) है। जबकि 60 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में सबसे कम (10. 06 प्रतिशत) जनसंख्या है। प्रतिदर्श परिवारों में समग्र रूप से 63.19 प्रतिशत जनसंख्या युवा वर्ग या कार्यशील जनसंख्या है जबकि बाल तथा वृद्ध के अन्तर्गत क्रमशः 25.04 तथा 10.06 प्रतिशत ही है। लगभग इसी प्रकार महिला एवं पुरूषों का अनुपात भी है।

लैंगिक आधार पर देखें तो तालिका 1.2 में प्रदर्शित आँकड़ों से ज्ञात होता है कि अध्ययन के लिए चयनित सम्पूर्ण सूचना दाताओं में कुल लिंगानुपात 906 है जिसमें 1537 पुरूषों में 1394 महिलाएं हैं जो राज्य के लिंगानुपात 963 से कम है। विभिन्न आयु वर्ग में सबसे अधिक लिंगानुपात 60 से अधिक आयु वर्ग का 1048 है और सबसे कम 0–14 आयुवर्ग में 872 है। इसके अतिरिक्त अन्य आयुवर्ग में भी लिंगानुपात अनुकूल नहीं है। बालिकाओं की संख्या का कम होना निश्चित तौर पर प्रदेश के प्रशासन के साथ–साथ समाज के लिये चिन्तनीय विषय है। यह कमी अनेक कारणों से उत्पन्न हो रही है। बदलते सामाजिक मूल्यों व आर्थिक प्रगति के कारण लोगों का एक सन्तान वह भी बालक के प्रति रूझान बढ़ा है, कन्या भ्रूणहत्या अभी भी पूर्णतः नियंत्रण में नहीं है। जैसे–जैसे साक्षरतास्तर बढ़ा है तो विवाह की आयु भी बढ़ गई है। देर से विवाह तथा एकल सन्तान के कारण कन्याओं की संख्या में कमी, महिलाओं का रोजगार में होना तथा दोनों दायित्वों के सफल निर्वहन के लिये भी बच्चों की जन्मदरमें कमी आना स्वाभाविक है। उपरोक्त सभी कारणों के अतिरिक्त स्थानीय तथा सामाजिक कारण भी हैं जिससे बालिकाओं की संख्या बालकों की अपेक्षा दशक प्रति दशक कम हो रही है। यह सामाजिक असन्तुलन गम्भीर समस्या पैदा कर रहा है।

आयु और लिंग संरचना को आगे तीन पारम्परिक समूहों में विभाजित किया गया है। निर्भरता अनुपात न केवल जनसंख्या की कमी के लिए उपयोग किया जाता है बल्कि इसकी गणना आर्थिक गतिविधियों के आधार पर आयु और लिंग संरचना के अनुसार पूरी तरह से की जाती है। प्रवासी आबादी का निर्भरता अनुपात विवरण निम्नलिखित तालिका सं0 1.3 में किया गया है–

तालिका 1.3 जनपद नैनीताल के भाबर क्षेत्र में प्रवासी प्रतिदर्श परिवारों की आबादी का निर्भरता अनुपात

आयुवर्ग (वर्ष)	पुरूष		महिला		कुल	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
0 – 14	392	25.50	342	24.54	734	25.04
15 – 59	969	63.05	883	63.34	1852	63.19
60 +	144	9.37	151	10.83	295	10.06
आयुनहींबताई	32	2.08	18	1.29	50	1.71
कुल	1537	100.00	1394	100.00	2931	100.00

स्रोत–क्षेत्र सर्वेक्षण, 2019–2020

तालिका 1.3 इंगित करती है कि कुल आबादी में से 25.04 प्रतिशत आर्थिक रूप से

निश्क्रिय बच्चे हैं, 63.19 प्रतिशत सक्रिय युवा व वयस्क हैं तथा 10.06 प्रतिशत वृद्ध व्यक्ति हैं। 14 वर्ष से कम उम्र के लोगों की वास्तविक संख्या को युवा आश्रित या बोझ लोगों के रूप में जाना जाता है और 15–59 से ऊपर के आयु समूहों को उत्पादक लोगों के रूप में जाना जाता है। 60 साल से अधिक उम्र के लोगों को अन्य व्यक्तियों पर निर्भर माना जाता है इसलिए समग्र निर्भरता अनुपात 63.19 प्रतिशत है जबकि युवा निर्भरता अनुपात 25.04 प्रतिशत है और वृद्ध व्यक्तियों का निर्भरता अनुपात 10.06 प्रतिशत है।

जातीय संरचना

भारत में जाति व्यवस्था ग्रामीण सामाजिक स्तरीकरण का प्रमुख आधार है। लोगों का जातीय समूह एक समान संस्कृति, भाषा, रीति–रिवाज, धर्म या जाति से जुड़ा हुआ है। हमारी सभी सामाजिक संस्थाओं में जाति व्यवस्था का प्रभाव इतना व्यापक तथा आन्तरिक रहा है कि इसके अभाव में ग्रामीण सामाजिक संरचना की समुचित विवेचना नहीं की जा सकती। जातीय संरचना के आधार पर व्यक्ति की प्रस्थिति, भूमिका, सुविधाओं तथा निर्योग्यताओं का निर्धारण होता है। प्रस्तुत अध्ययन से सम्बन्धित प्रतिदर्श परिवारों की स्थिति जातीय आधार पर निम्नांकित सारणी द्वारा स्पष्ट है।

तालिका 1.4 जनपद नैनीताल के भाबर क्षेत्र में प्रवासी प्रतिदर्श परिवारों का जातीय आधार पर वितरण

जातियाँ	परिवारों की संख्या	प्रतिशत	जनसंख्या	प्रतिशत
ब्राह्मण	249	47.88	1324	45.17
क्षत्रिय	202	38.85	1175	40.09
अनुसूचितजाति	69	13.27	432	14.74
योग	520	100	2931	100

स्रोत–क्षेत्र सर्वेक्षण, 2019–2020

तालिका 1.4 से स्पष्ट है कि सम्पूर्ण प्रतिदर्श परिवारों में से सर्वाधिक (45.17 प्रतिशत) ब्राह्मण जाति के हैं, इसके बाद क्षत्रिय (40.09 प्रतिशत) हैं। अनुसूचित जातियों की संख्या सबसे कम (14.74 प्रतिशत) है। जातीय आधार पर प्रतिदर्श परिवारों में अत्यधिक असमानता देखने को मिलती है। इस का प्रमुख कारण प्रत्येक चयनित गाँव में जातीय आधार पर प्रतिदर्श परिवारों में संख्यात्मक भिन्नता एवं अध्ययन के लिए चुनाव की शर्तें मुख्य हैं। कुमाऊँ के पर्वतीय क्षेत्रों में अनुसूचित जाति को शिल्पकार की संज्ञा प्राप्त है, यह जातियाँ परम्परागत रूप से अपने (लोहार गिरी, बढ़ई गिरी इत्यादि) का काम करती हैं। उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है विशेष रूप सामान्य जाति के लोग अध्ययन क्षेत्र में अधिक प्रवासित हुए हैं और अनुसूचित जाति और जनजाति का प्रतिशत प्रवासित होने में बहुत कम है इसका प्रमुख कारण अनुसूचित जाति के लोगों का आर्थिक और शैक्षिक रूप से कमजोर होना है।

परिवार का आकार

परिवार की संरचना एवं प्रकृति के अनुसार ही किसी समुदाय को विशेष स्वरूप प्राप्त होता

है। परिवार से अभिप्राय विश्व के सभी समाजों में शिशु का जन्म और पालन–पोषण का उत्तरदायित्व परिवार का होता है। शिशुओं को संस्कार देने और समाज के आचार, व्यवहार और नियमों में शिक्षित करने का दायित्व मुख्यतः परिवार का ही होता है। इसी परम्परा और नियम के द्वारा समाज की सांस्कृतिक विरासत और संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को स्वभाविक रूप से हस्तांतरित होती रहती है। सूचनादाताओं की प्रकृति अन्य कारकों के साथसाथ परिवार के आकार से भी प्रभावित होती है। परिवार के आकार के आधार पर यह अनुमान भी लगाया जा सकता है कि उस परिवार के कितने सदस्य परिवार के साथ निवास कर रहे हैं और कितने सदस्य अन्यत्र रोजगार के लिए जा चुके हैं। परिवार दो श्रेणियों एकल/ संयुक्त/विस्तारित समूह में हो सकता है। एकल परिवार में पति–पत्नी, उनके बच्चे शामिल होते हैं और संयुक्त या विस्तारित परिवार घरेलू समूह का संयुक्त रूप है जिसमें दो या अधिक परिवारों के माता–पिता और उनके बच्चे शामिल होते हैं। परिवार के आकार के आधार पर प्रतिदर्श परिवारों का विवरण तालिका 1.5 में उल्लिखित आँकड़ों से स्पष्ट है–

तालिका 1.5 जनपद नैनीताल के भाबर क्षेत्र में प्रवासी प्रतिदर्श परिवारों का आकार के अनुसार वितरण

वर्ग/परिवारकाआकार	परिवार के प्रकार					
	एकल	प्रतिशत	संयुक्त	प्रतिशत	कुल	प्रतिशत
आदर्श 0–4	139	30.28	–		139	26.73
औसत 5	101	22.01			101	19.42
बड़ा 6–8	206	44.88	41	67.21	247	47.5
बहुतबड़ा 9+	13	2.83	20	32.79	33	6.35
कुल	459	100.00	61	100.00	520	100

स्रोत–क्षेत्र सर्वेक्षण, 2019–2020

परिवार का आकार जनसंख्या के सामाजिक एवं आर्थिक विकास स्तर का बोध कराता है। कुल जनसंख्या में परिवारों की संख्या का भाग देकर पूर्णांक का ध्यान रखते हुए प्रति परिवार आकार की गणना की गई है। औसत सदस्यों की प्रति परिवार अधिक संख्या संयुक्त परिवारों का द्योतक होती हैं। जबकि प्रति परिवार कम सदस्यों की संख्या एकल परिवार को प्रदर्शित करती हैं। प्रतिदर्श परिवारों में वर्ष 2016–22 के क्षेत्र सर्वेक्षण के अनुसार भाबर में परिवारों का आकार औसत पाँच व्यक्ति प्रति परिवार है। उत्तराखण्ड में भी 2011 की जनगणनानुसार परिवारों का आकार औसत पाँच व्यक्ति प्रति परिवार ही है। आदर्श जनसंख्या नीति के अनुसार औसत चार सदस्य प्रति परिवार 26.73 प्रतिशत परिवारों की जनसंख्या है तथा औसत 5 सदस्य प्रति परिवार 22 प्रतिशत परिवारों में रहते हैं। सबसे अधिक 6 से 8 सदस्य प्रति परिवार 47.5 प्रतिशत (247 परिवार) में रहते हैं।

प्रवासियों की ग्रामीण एवं शहरी संरचना

उत्तराखण्ड के प्राचीन स्थानों में चम्पावत, अल्मोड़ा, श्रीनगर, जोशीमठ, मायापुरी, कनखल, मोरध्वज, हरिद्वार, गोविशाण (काशीपुर), बद्रीनाथ, केदारनाथ, ऋशिकेष, पिथौरागढ़, बागेश्वर, बाजपुर, रूद्रपुर आदि अनेक ऐसी ही जगह हैं जो अपना रूप बदलते वर्तमान स्वरूप में

है। वर्तमान स्वास्थ्यवर्धक पर्यटक स्थल भी गाँवों के रूप में ही थे जिनमें नैनीताल, मसूरी, पौड़ी आदि प्रमुख हैं। सैनिक छावनियाँ जो अंग्रेजों ने स्थापित किये वे एक समय गाँवों की सीमाओं के अन्तर्गत थी इनमें नैनीताल, अल्मोड़ा, रानीखेत, लैन्सडाऊन, गढ़ीकैन्ट, क्लेमेन्ट टाऊन, मसूरी आदि प्रमुख हैं। उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि उत्तराखण्ड के अधिकांश शहर पहले गाँवों के रूप में थे। आज भी जो सेन्सस टाऊन घोषित हो रहे हैं वे गाँवों के विकसित रूप ही हैं। अध्ययन क्षेत्र भाबर में तीन विकास खण्डों में से 12 गाँवों का चयन किया गया जिसमें मात्र दो क्षेत्र हल्द्वानी तल्ली और बिठोरिया न. 1 नगरीय क्षेत्र में हैं। नगरनिगम के दो गाँवों के 205 परिवारों में 37.84 प्रतिशत जनसंख्या रहती है तथा ग्रामीण क्षेत्र के 10 गाँवों के 315 परिवारों में 62.16 प्रतिशत जनसंख्या रहती है।

तालिका 1.6 जनपद नैनीताल में अध्ययन क्षेत्र भाबर में प्रतिदर्श प्रवासियों की ग्रामीण एवं नगरीय संरचना

प्रतिदर्शगाँव / नगरीय क्षेत्र	तहसील	कुलचयनितप्रतिदर्शपरिवारों की संख्या	प्रतिदर्शपरिवारों की कुलजनसंख्या			जनसंख्या काप्रतिशत
ग्रामीण क्षेत्र			**पुरूष**	**महिला**	**कुल**	**कुल**
हिम्मतपुरतल्ला	हल्द्वानी	47	150	136	286	9.76
प्रेमपुरलोसानी		34	95	88	183	6.24
हरिपुरतुलाराम		18	62	46	108	3.68
देवलामल्ला		22	66	60	126	4.30
नवाड़ खेड़ा		44	138	127	265	9.04
फतेहपुर		22	61	67	128	4.37
छोई	रामनगर	25	76	69	145	4.95
गैबुआ खास		40	117	110	227	7.74
कमौला	कालाढूंगी	28	79	73	152	5.19
गुलजारपुररामसिंह		35	105	97	202	6.89
कुल ग्रामीण जनसंख्या		**315**	**949**	**873**	**1822**	**62.16**
नगरीय क्षेत्र						
हल्द्वानीतल्ली	हल्द्वानी	105	316	271	587	20.03
बिठोरिया न. 1		100	272	250	522	17.81
कुल नगरीय जनसंख्या		**205**	**588**	**521**	**1109**	**37.84**
कुल		**520**	**1537**	**1394**	**2931**	**100.00**

स्रोत–क्षेत्र सर्वेक्षण 2019–2020

अध्ययन क्षेत्र में चयनित गाँवों में 62.16 प्रतिशत (1822) जनसंख्या ग्रामीण और शेष 37. 84 प्रतिशत (1109) जनसंख्या शहरी क्षेत्रों में निवास करती है। हल्द्वानी तहसील में ग्रामीण क्षेत्र के 6 गाँव, तहसील रामनगर से 2 तथा तहसील कालाढूंगी से 2 गाँव लिये गये हैं। अध्ययन प्रदेश में 2 नगरीय क्षेत्र हैं जो हल्द्वानी तहसील से लिये गये हैं। चयनित परिवारों में 315 परिवार ग्रामीण क्षेत्र में तथा 205 परिवार नगरीय क्षेत्र में हैं।

प्रवासियों की शैक्षिक स्थिति

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का भाक्तिशाली माध्यम है। शिक्षा न केवल व्यक्ति के वाह्य सम्पर्क की सम्भावनाओं को बढ़ाती है वरन् एक ऐसी तर्क शक्ति और दृष्टिकोण भी विकसित करती है जो परिवर्तन के पक्ष में होता है। शिक्षित व्यक्ति अपने ज्ञान के माध्यम से परिस्थितियों एवं समस्याओं के प्रति अधिक जागरूक होता है। इससे उसके द्वारा दी गयी सूचनायें अध्ययन की दृष्टि से अधिक परिपक्व होती है। भाबर क्षेत्र के प्रतिदर्श परिवारों में प्रवासियों की शैक्षिक स्थिति को तालिका सं. 1.7 द्वारा व्यक्त किया गया है।

तालिका 1.7 जनपद नैनीताल में भाबर क्षेत्र में प्रतिदर्श परिवारों में साक्षरता स्तर

शिक्षाकास्तर	पुरूष		महिला		कुल	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
निरक्षर	95	6.98	118	8.93	213	7.94
साक्षर/प्राथमिक	149	10.94	163	12.33	312	11.62
जूनियर हाई स्कूल	231	16.96	207	15.66	438	16.32
हाईस्कूल	199	14.61	294	22.24	493	18.37
इन्टरमीडिएट	275	20.19	235	17.78	510	19.00
स्नातकपास	188	13.80	145	10.97	333	12.41
परास्नातकपास	225	16.52	160	12.10	385	14.34
कुल	1362	100.00	1322	100.00	2684	100.00

स्रोत–क्षेत्र सर्वेक्षण, 2019–2020

तालिका 1.7 के अनुसार अध्ययन क्षेत्र में चुने गए सूचना दाताओं में से सर्वाधिक (19 प्रतिशत) प्रवासी व्यक्ति इण्टरमीडिएट पास हैं। 18.37 प्रतिशत प्रवासी हाईस्कूल, 16.32 प्रतिशत जूनियर हाईस्कूल तथा 11.62 प्रतिशत व्यक्ति प्राथमिक शिक्षा पास या साक्षर हैं। अध्ययन क्षेत्र में 12.41 प्रतिशत प्रवासी स्नातक पास तथा 14.34 प्रतिशत परास्नातक पास हैं। क्षेत्र में प्रतिदर्श परिवारों में 7.94 प्रतिशत प्रवासी निरक्षर हैं। इससे स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में अधिकांश प्रवासी व्यक्ति साक्षर हैं जिसमें से 26.75 व्यक्तियों ने तो उच्च क्षिक्षा प्राप्त की है। अध्ययन क्षेत्र जनपद मुख्यालय में स्थित होने के कारण साक्षरता का प्रचार प्रसार अधिक रहा है तथा यहाँ संचार, आवागमन तथा शैक्षिक संस्थाओं की सुविधाएं उपलब्ध हैं और प्रवासी व्यक्तियों में भी अधिक साक्षरता है। आर्थिक स्तर एवं जागरूकता का प्रभाव भी साक्षरता पर स्पष्ट दिखाई देता है।

अध्ययन क्षेत्र भाबर में प्रतिदर्श परिवारों में कुल साक्षरता को देखने से ज्ञात होता है कि कुल चयनित प्रतिदर्श परिवारों में साक्षरता 89.76 प्रतिशत है। सर्वाधिक साक्षरता 93.67 प्रतिशत हल्द्वानी तल्ली में है जिसमें 95.74 प्रतिशत पुरूष तथा 91.37 प्रतिशत महिला साक्षरता है। दूसरी ओर सबसे कम 84.48 प्रतिशत हल्द्वानी विकास खण्ड के देवलामल्ला गाँव में है। हल्द्वानी विकास खण्ड के बिठोरिया न. 1, फतेहपुर तथा हिम्मतपुरतल्ला में भी क्रमशः 91.13, 90.13 तथा 90.36 प्रतिशत व्यक्ति साक्षर हैं। शहरों में शैक्षिक संस्थाओं की अधिकता एवं लोगों की शिक्षा के प्रति जागरूकता के कारण अधिक साक्षरता पाई जाती है। इसके अन्तर्गत भाहरी क्षेत्र में सैनिक तथा उनके परिवार ही अधिक रहते हैं उनकी साक्षरता स्तरपूर्व से ही अधिक है। यहाँ पर यह तथ्य स्पष्ट

हो रहा है कि पर्वतीय क्षेत्रों से आने वाले प्रवासी में अधिकांश जनसंख्या पढ़ी लिखी होती है और बच्चों को पढ़ाकर अच्छे व्यवसाय में भेजने का प्रयास रहता है। महिलाओं में साक्षरता बढ़ाने में पहले समाज उदासीन रहता था लेकिन अब साक्षरता बढ़ाने के बाबत सभी लोग जागरूक हो गये हैं। इसका प्रमाण विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में पंजीकृत छात्र छात्राओं की संख्या से भी अनुमान लगाया जा सकता है जहाँ 70 प्रतिशत छात्रा तथा 30 प्रतिशत छात्र ही रहते हैं। नगरीय क्षेत्रों में स्थित गाँवों में महिला तथा पुरूषों के बीच साक्षरता में अन्तर भी कम पाया गया है। सबसे अधिक महिला पुरूष साक्षरता में अन्तर हल्द्वानी तहसील में देवलामल्ला (11.98 प्रतिशत) तथा रामनगर तहसील में छोई (10.23 प्रतिशत) में है। सारणी देखने से स्पष्ट होता है कि जो गाँव भाहरी क्षेत्रों से अधिक दूर स्थित है वहीं महिला–पुरूष साक्षरता में अधिक अन्तर है।

तालिका 1.8 जनपद नैनीताल के भाबर क्षेत्र में प्रतिदर्श परिवारों में साक्षरता दर (प्रतिशत)

प्रतिदर्श गाँव/शहरी क्षेत्र	साक्षर व्यक्तियों की संख्या			साक्षरता दर प्रतिशत			महिला–पुरूष साक्षरता दर में अन्तर (प्रतिशत)
ग्रामीण क्षेत्र	**व्यक्ति**	**पुरूष**	**महिला**	**व्यक्ति**	**पुरूष**	**महिला**	
हिम्मतपुरतल्ला	225	118	107	90.36	92.19	88.43	3.76
प्रेमपुरलोसानी	139	77	62	85.28	89.53	80.52	9.01
हरिपुरतुलाराम	84	49	35	85.71	87.5	83.33	4.17
देवलामल्ला	98	55	43	84.48	90.16	78.18	11.98
नवाड़ खेड़ा	218	117	101	87.30	90.70	83.47	7.23
फतेहपुर	105	50	55	90.51	92.59	88.71	3.88
छोई	113	62	51	86.26	91.18	80.95	10.23
गैबुआ खास	190	102	88	89.62	93.58	85.44	8.14
कमौला	123	66	57	87.23	90.41	83.82	6.59
गुलजारपुररामसिंह	163	87	76	88.11	91.57	84.44	7.13
नगरीय क्षेत्र							
हल्द्वानीतल्ली	503	270	233	93.67	95.74	91.37	4.37
बिठोरिया न. 1	432	234	198	91.13	93.22	88.89	4.04
कुलऔसत	2393	1287	1106	89.76	92.31	86.42	5.89

स्रोत–क्षेत्र सर्वेक्षण 2019–2020 (0–6 वर्ष की जनसंख्या सम्मिलित नहीं है) साक्षरता 7 वर्ष से अधिक आयु की जनसंख्या से निकाली गई है।

प्रजनन और जन्म मृत्युदर

जनसंख्या पैरामीटर के क्षेत्र में हुए अनुसंधान हमें सामान्यतः जनसंख्या के पोषण स्तर के प्रभाव के बारे में वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। वस्तुतः जन्म मृत्यु सम्बन्धी आंकड़े कई तरह से उपयोगी हो सकते हैं। जन्म मृत्यु दरें समुदाय, देश के सम्पूर्ण सामाजिक–आार्थिक विकास की

जांच करने में सहायक हो सकते हैं। समुदाय में प्रजनन शक्ति और मर्त्यता समुदाय के सम्पूर्ण स्वास्थ्य और जीवन स्तर के सूचक होते हैं और इस प्रकार ये सामाजिक–आर्थिक विकास की आवश्यकता को दर्शाते हैं।

अपरिष्कृत जन्मदर और मृत्युदर

अपरिष्कृत जन्म–दर मानव उत्पादकता के मापन की सरलतम तथा सर्वाधिक लोकप्रिय विधि है। इसे वर्ष के मध्यावधि की प्रति हज़ार जनसंख्या पर होने वाले जन्म के आधार पर व्यक्त किया जाता है। यहाँ यह बताना उचित होगा कि एक वर्ष के जीवित जन्मों को ही समाहित किया जाता है (चान्दना आर.सी. 2014)। इसका परिकलन निम्नलिखित ढंग से किया जाता है:

$$\text{अपरिष्कृत जन्म–दर} = \frac{\text{अ}}{\text{ज}} \times 1000$$

यहाँ अ= वर्ष में कुल जीवित जन्म ज= वर्ष के मध्यावधि की अनुमानित जनसंख्या

अपरिष्कृत जन्मदर एक निर्दिष्ट अवधि में जीवित जन्मों का उस अवधि में औसत जनसंख्या से अनुपात है। अध्ययन क्षेत्र में अपरिष्कृत जन्मदर प्रति 1000 जनसंख्या पर 11.26 प्रतिशत व्यक्ति है जो 2017 में राष्ट्रीय दर (18.08) से कम है। उत्तराखण्ड में अपरिष्कृत जन्मदर 17.3 और जनपद नैनीताल में 16.8 है जबकि अपरिष्कृत मृत्युदर प्रति 1000 जनसंख्या पर केवल 6.82 व्यक्ति है और यह राष्ट्रीय मृत्युदर (7.24) और राज्य मृत्युदर (6.7) से कम है। जनपद नैनीताल में देखें तो अपरिष्कृत मृत्युदर 5.5 है। मृत्युदर में कमी अध्ययन क्षेत्र में शुरू की गई सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं और स्वच्छता सुविधाओं में सुधार के कारण हुई है। अध्ययन क्षेत्र में उच्च जन्मदर और निम्न मृत्युदर जिले में प्रचलित प्रमुख जनसांख्किीय लक्षण हैं (तालिका–1.9 अ 1.9 ब)।

तालिका 1.9 जनपद नैनीताल के भाबर में बच्चे के जन्म एवं मृत्यु की संख्या

(अ) जन्म और जीवित बच्चों की संख्या (प्रति 1000 जनसंख्या)

लिंग	जन्म की संख्या	प्रतिशत (प्रति हजार)
पुरूष	19	6.48
महिला	14	4.78
कुल	33	11.26

स्रोतः क्षेत्र सर्वेक्षण, 2019–2020

(ब) मृत्यु की संख्या (प्रति 1000 जनसंख्या)

आयुवर्ग	पुरूष		महिला		कुल	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
0–4	2	0.68	3	1.02	5	1.71
5–14	0	00	1	0.34	1	0.34
15–49	1	0.34	4	1.36	5	1.71
50+	5	1.71	3	1.02	8	2.73
कुल	8	2.72	11	3.75	19	6.48

स्रोतः क्षेत्र सर्वेक्षण, 2019–2020

तालिका 1.9 'अ' के अनुसार एक वर्ष में जन्मे व्यक्तियों की संख्या 33 है जिसमें 6.48 प्रतिशत प्रतिहजार पुरूष है जबकि 4.78 प्रतिहजार महिलाएं हैं। अध्ययन क्षेत्र में पुरूष जन्मदर, महिला जन्मदर की तुलना में अधिक है। तालिका 1.9 'ब' के अनुसार कुल मृत्युदर 6.48 प्रतिहजार है जिसमें से 2.72 प्रतिहजार पुरूष तथा 3.75 प्रतिहजार महिलाओं की है। पुरूषों में 0.68 प्रतिहजार मौत 0–4 आयुवर्ग की है। 0.34 प्रतिहजार 15–49 आयुवर्ग के बीच और 1.71 प्रतिहजार 50 वर्ष से अधिक आयुवर्ग की महिलाओं की मृत्यु के मामले में कुल मृत्यु में से 1.02 प्रतिहजार 0–4 आयुवर्ग के बीच, 0.34 प्रतिहजार 5 –14 आयुवर्ग के बीच, 1.36 प्रतिहजार 15–49 आयुवर्ग के बीच और 1. 02 प्रतिहजार 50 वर्ष से अधिक आयु में हुई है। अध्ययन क्षेत्र में महिलाओं में शिशु मृत्युदर (1.02) पुरूषों में शिशु मृत्युदर (0.68) की तुलना में अधिक है। शोध प्रदेश भाबर में जैसे–जैसे साक्षरतास्तर बढ़ा है तो विवाह की आयु भी बढ़ गई है। देर से विवाह तथा एकल सन्तान के कारण कन्याओं की संख्या में कमी, महिलाओं का रोजगार में होना तथा दोनों दायित्वों के सफल निर्वहन के लिये भी बच्चों की जन्मदर में कमी आना स्वाभाविक है।

विवाह के समय महिलाओं की आयु

विवाह के समय माता की आयु प्रजननदर को प्रभावित करती है। कम उम्र में शादी करने से प्रजनन क्षमता अधिक होती है। अध्ययन क्षेत्र में 520 परिवारों में प्रजनन आयु के भीतर 1052 महिलाओं में से 792 महिलाएं प्रजनन क्षमता वाली हैं और 82 महिलाएं विद्यार्थी हैं जबकि शेष या तो बाँझ हैं या अविवाहित हैं या विधवा है। विवाह के समय अधिकांश महिलाओं की आयु 15 से 30 वर्ष के बीच थी जिसमें से अधिकांश वृद्ध महिलाओं का विवाह 20 वर्ष की आयु के भीतर कर दिया गया था जबकि युवा महिलाओं का विवाह 20 से 25 वर्ष की आयु के भीतर किया गया।

PURVA MIMAANSA

तलिका 1.10 नैनीताल जनपद के भाबर क्षेत्र में विवाह के समय आयु के अनुसार प्रसव कराने वाली महिलाओं की संख्या

आयुसमूह (वर्ष)	महिलाओं की संख्या	प्रतिशत
15–20	89	11.23
21–25	376	47.47
26–30	296	37.37
30 से अधिक	31	3.91
कुल	792	.100

स्रोतः क्षेत्र सर्वेक्षण, 2019–2020

तालिका 1.10 के अनुसार 11.23 प्रतिशत महिलाओं का विवाह 20 वर्ष या उससे कम उम्र में हुआ था, 47.47 प्रतिशत महिलाओं का विवाह 21 से 25 वर्ष के भीतर हुआ, 37.37 प्रतिशत महिलाओं का विवाह 26 से 30 वर्ष के भीतर तथा शेष 3.91 प्रतिशत महिलाओं का विवाह 30 वर्ष से अधिक उम्र में हुआ। भारत में कानूनी रूप से महिलाओं की विवाह की उम्र 18 वर्ष है। इस तथ्य के बावजूद भी क्षेत्र में महिलाओं की शादी 18 वर्ष से कम उम्र में भी हुई है। इसका कारण कम उम्र में विवाह की परम्परा ग्रामीण समुदायों में अभी भी कायम है या कुछ वृद्ध महिलाओं का विवाह देश में विवाह कानून (संविधान संसोधन 1978) से पूर्व हुआ है, यद्यपि शिक्षा, चेतना और कानूनी प्रतिबंधों के कारण यह प्रथा धीरे–धीरे कम होती जा रही है।

बच्चे पैदा करने वाली महिलाओं में जन्म की संख्या भिन्न–भिन्न होती है। अधिकांश प्रजनन करने वाली महिलाओं के जन्म की संख्या सीमित होती है।

अध्ययन क्षेत्र में प्रतिदर्श परिवारों में देखा गया है कि बच्चे पैदा करने वाली महिलाओं का प्रतिशत जन्म की वृद्धि के साथ धीरे–धीरे कम हो रहा है। सबसे अधिक 46.84 प्रतिशत महिलाओं ने दो बच्चों को जन्म दिया, 19.44 प्रतिशत महिलाओं ने तीन, 16.54 प्रतिशत महिलाओं ने एक (1) और 10.98 प्रतिशत महिलाओं ने 4 बच्चों को जन्म दिया। लगभग 94 प्रतिशत महिलाओं के 4 बच्चे तक हैं और केवल 6 प्रतिशत महिलाओं के जन्म की संख्या 5 से 9 बच्चों तक के बीच हैं। अध्ययन क्षेत्र में प्रतिदर्श परिवारों में महिलाओं में कुल प्रजनन दर 2.5 है। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अनुसार भारतमें 2015–16 में कुल प्रजनन दर 2.2 है। अध्ययन क्षेत्र में प्रजनन दर भारत की अपेक्षा अधिक होने का कारण ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं में शैक्षिक जागरूकता और पुत्र प्राप्ति का मोह देखा गया है। यद्यपि यह देखा गया है कि शैक्षिक जागरूकता के कारण युवा महिलाओं में जन्म देने की संख्या में गिरावट आयी है।

PURVA MIMAANSA

तालिका 1.11 जनपद नैनीताल के भाबर क्षेत्र में प्रतिदर्श परिवारों में जन्म और प्रसूति में महिलाओं का प्रतिशत

जन्म की संख्या	प्रसवमहिलाओं की संख्या	प्रतिशत
1	131	16.54
2	371	46.84
3	154	19.44
4	87	10.98
5	21	2.65
6	12	1.52
7	9	1.14
8	5	0.64
9	2	0.25
कुल	792	100

स्रोतः क्षेत्र सर्वेक्षण, 2019–2020

जन्मदर और मृत्युदर के स्वरूप में विभिन्नता

जन्मदर और मृत्युदर के आंकड़े जनसांख्किीय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जो जनसंख्या में काफी बदलाव लाते हैं। भारत में मृत्युदर की सामान्य प्रवृत्ति 2013 से 2018 के बीच 7.2 से घटकर 6.2 रह गयी है। इसका नतीजा यह हुआ कि जनसंख्या में करीब 10 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इस सन्दर्भ में प्रवासी समुदाय की प्रजनन क्षमता और मृत्युदर का विश्लेषण विवाह के समय उम्र और प्रतिदर्श परिवारो की शिक्षा के आधार पर किया गया है। महिलाओं की शादी के समय उनकी उम्र के अनुसार प्रजनन और मृत्युदर का विस्तृत विवरण तालिका 1.12 में दिया गया है।

तालिका 1.12 नैनीताल जनपद के भाबर क्षेत्र में प्रतिदर्श परिवारों में महिलाओं के विवाह की उम्र के अनुसार प्रजनन एवं मृत्युदर

महिलाओं के विवाह की उम्र (वर्ष में)	महिलाओं की संख्या	जीवितबच्चों की संख्या कामाध्य		मृतबच्चों की संख्या कामाध्य	
		संख्या	औसत	संख्या	औसत
20 से नीचे	89	241	2.70	18	0.20
21 –25	676	1173	1.74	38	0.06
26–30	296	516	1.74	12	0.04
30 से अधिक	31	51	1.64	1	0.03
कुल	792	1981	2.50	69	0.03

स्रोतः क्षेत्र सर्वेक्षण, 2019–2020

PURVA MIMAANSA

अध्ययन क्षेत्र में प्रतिदर्श परिवारों में औसतन 2.70 प्रतिशत बच्चे 20 वर्ष से कम आयु में विवाह करने वाली महिलाओं के हैं। तालिका को देखने से स्पष्ट हो रहा है महिलाओं की शादी में बढ़ती उम्र के साथ जीवित बच्चों की औसत संख्या घट रही है। विवाह समूह में 21–25 वर्ष की आयुवर्ग में 1.74, 26–30 वर्ष की आयुवर्ग में भी 1.74, 30 वर्ष से अधिक आयुवर्ग में 1.64 प्रतिशत बच्चे जीवित हैं। मृत्युदर की दृष्टि से देखे तो विवाह में बढ़ती उम्र के साथ मृत बच्चों की संख्या में गिरावट दर्ज की गयी है। यद्यपि अगर मृत्युदर बढ़ती है तो वहाँ स्वास्थ्य देखभाल, चिकित्सा सुविधा और कुपोषण की कमी के कारण होती है। 20 वर्ष से कम आयुवर्ग की महिलाओं में मृत बच्चों का प्रतिशत 0.20 है, 21–25 आयुवर्ग में मृत बच्चों का प्रतिशत 0.06, 26–30 आयुवर्गमें 0. 04 और 30 से अधिक आयुवर्ग में 0.03 प्रतिशत है।

महिला शिक्षा के शैक्षिक मानक के अनुसार जन्म और मृत्युदर को सामाजिक और आर्थिक विकास में मूलकारक के रूप में देखा गया है। किसी भी देश का मानवसंसाधन भी शिक्षा के स्तर से अत्यधिक प्रभवित होता है। जन्मदर को कम करने में शिक्षा सीधे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा का स्तर जितना अधिक होता है, जन्मदर कम होती है। लोगो में शैक्षिक स्तर में वृद्धि के साथ–साथ विवाह की आयु में भी वृद्धि देखी गयी है। परिवार नियोजन के साधनों को अपनाना भी शिक्षा का ही परिणाम है।

निष्कर्ष

प्रतिदर्श परिवारों में प्रतिहजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या 906 है जो पूरे हिमालय (944), उत्तराखण्ड (963) तथा समग्रदेश से कम है। बालिकाओं की संख्या का कम होना निश्चित तौर पर प्रदेश के प्रशासन के साथ–साथ समाज के लिये चिन्तनीय विषय है। यह कमी अनेक कारणों से उत्पन्न हो रही है। बदलते सामाजिक मूल्यों व आर्थिक प्रगति के कारण लोगों का एक सन्तान वह भी बालक के प्रति रूझान बढ़ा है, कन्या भ्रूणहत्या अभी भी पूर्णतः नियंत्रण में नहीं है। उपरोक्त सभी कारणों के अतिरिक्त स्थानीय तथा सामाजिक कारण भी हैं जिससे बालिकाओं की संख्या बालकों की अपेक्षा दशक प्रतिदशक कम हो रही है। यह सामाजिक असन्तुलन गम्भीर समस्या पैदा कर रहा है। साक्षरता की दृष्टि से चयनित प्रतिदर्श परिवारों में साक्षरता का प्रतिशत 89.76 है जो उत्तराखण्ड के कुल औसत साक्षरता (78.8 प्रतिशत) से अधिक है। चयनित प्रतिदर्श परिवारों में उच्च साक्षरता का पाया जाना लोगों की शिक्षा के प्रति जागरूकता और शैक्षणिक सुविधाओं का सुलभ होना है।

जैसे–जैसे साक्षरता स्तर बढ़ा है तो विवाह की आयु भी बढ़ गई है। देर से विवाह तथा एकल सन्तान के कारण कन्याओं की संख्या में कमी, महिलाओं का रोजगार में होना तथा दोनों दायित्वों के सफल निर्वहन के लिये भी बच्चों की जन्मदर में कमी आना स्वाभाविक है। मृत्युदर में कमी अध्ययन क्षेत्र में शुरू की गई सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं और स्वच्छता सुविधाओं में सुधार के कारण हुई है। जनपद नैनीताल और उत्तराखण्ड की जनसंख्या की क्रियाशीलता दर भी सन्तोषजनक है। ये सभी मापदण्ड उत्तराखण्ड में जनसंख्या स्थिरता एवं ह्रास की प्रवृत्ति के

द्योतक नहीं हैं। उत्तराखण्ड के ग्रामों में जनसंख्या ह्रास के जो लक्षण दिखाई पड़ने लगे हैं उनके पीछे स्थायी प्रवास एकमात्र कारण है। निष्कर्षतः बाह्य प्रवास मुख्यतः अन्य राज्यों की ओर स्थायी परिवार प्रवास उत्तराखण्ड की जनसंख्या की संरचना में मूलभूत परिवर्तन कर रहा है। यहाँ की अर्थव्यवस्था को अनुत्पादक एवं आकर्षक बनाने के साथ उत्तराखण्ड राज्य की पर्वतीय पहचान एवं सामाजिक पृष्ठभूमि को हो रही क्षति का मुख्य कारण भी बाह्य प्रवास ही है। सरकारी स्तर पर गठित हुआ पलायन आयोग इस समस्या की सार्वभौमिक स्वीकारोक्ति तो है परन्तु परिणाम मिलने अभी शेष हैं।

सन्दर्भ सूची

खर्कवाल, एस. सी. (1993). *फिजिको–कल्चरल इनवायरनमैन्ट एण्ड डेवलेपमैन्टइन* यू. पी. हिमालया, नूतल पब्लिकेशन्स कोटद्वार (गढ़वाल)।

खनका, एस0 एस0, (1984). माइग्रेशन फ्रॉम कुमाऊँ रीज़नः सम फाइंडिंग्स बेस्ड ऑन ए सेम्पल स्टडी ऑफ पिथौरागढ़ डिस्ट्रिक्ट, *इंडियन जरनल ऑफ लेबर इकोनोमिक्स,* वॉल्यूम. 26 (4): 302–312।

पलड़िया जी0, (2023). कुमाऊँ हिमालय के नैनीताल जनपद के पर्वतीय क्षेत्र से भाबर क्षेत्र में हुआ स्थायी प्रवास और व्यावसायिक परिवर्तन, थीसिस कुमाऊँ यूनिवर्सिटी नैनीताल, 87–112।

चन्द, आर., तड़ागी, आर.सी.एस. एण्ड कुमार, के., (1995). चेन्जिंग पॉपुलेशन ऑफ द हिमालया, 1981–1991, पेज 1–24।

चन्द, आर. एवं तड़ागी आर. सी. एस., (1996). उत्तराखण्ड वासियों का वहिर्प्रव्रजन, उत्तराखण्ड आज अल्मोड़ा बुक डिपो अल्मोड़ा, 170–179।

चन्द, आर, तड़ागी, आर. सी. एस. एण्ड पन्त बी. आर. (2016). चेन्जिंग डेमोग्राफिकल प्रोफाइल एण्ड माइग्रेशन पैटर्न इन उत्तराखण्ड। इननेगीसी. एस., (3), उत्तराखण्ड नेचर, कल्चर, बायोडायवर्सिटी, विंसर पब्लिसिंग को, देहरादून, 390–403।

चान्दना, आर0 सी0, (2014). जनसंख्या भूगोल, नवमपरिवर्धित संस्करण, कल्याणी पब्लिशर्स नई दिल्ली, 276–297।

तड़ागी आर0 सी0 एस0 एण्ड कुमार के0, (1995). माइग्रेशन पैटर्नइन द सैन्ट्रल हिमालया, इन बी0 आर0 पंत एण्ड एम0 सी0 पंत (3) ग्लिमसिस ऑफ सेन्ट्रल हिमालयाः ए सोशियोइकोनोमिक एण्ड इकोलोजिकल पर्सपैक्टिव, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली : 168–182

पन्त, बी0 आर0, (1995). द सेन्ट्रल हिमालयाः ज्योग्राफिकल आउटलुक, इन बी0आर0 पन्त एण्ड

एम0सी0 पन्त (2) ग्लिमसिस ऑफ सेन्ट्रल हिमालयाः ए सोशियोइकोनोमिक एण्ड इकोलोजिकल पर्सपैक्टिव राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली : 3–86।

पन्त, बी. आर., (1996). ए ज्योग्राफिकल स्टडी ऑफ सिड्यूल्डकास्ट पॉपुलेशन इन उत्तराखण्ड (इण्डिया) *द इण्डो नेशियन जर्नल ऑफ ज्योग्राफी*, 28 (7): 25–38।

पन्तबी. आर. एण्ड घनानन्दपलड़िया, (2017). उत्तराखण्ड का जनजातीय जनांकिकीय अध्ययन, इनहरित कुमार मीणा (सम्पादक) भारतीय ऐतिहासिक सांस्कृतिक परम्परा और आदिवासी विमर्श। एम. के. बुक एजेन्सी नई दिल्लीः 20–49।

पंत, बी. आर. चंद, आर. मेहता, बी. एस (2022) : उत्तराखण्ड जनसंख्या परिदृश्य एवं परिवर्तन, पहाड़ फाउण्डेशन परिक्रमा तल्लाडांडा तल्लीताल नैनीताल 1–304।

मेवाड़ी, देवेन्द्र, (2013). मेरी यादों का पहाड़, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, पेजः 26–92।

मैठाड़ी, डी.डी. एण्ड नौटियाल डी. (2010). उत्तराखण्ड हिमालय के जनपद पौढ़ी गढ़वाल का गत्यात्मक जनसंख्या परिदृश्य, द ट्रान्सेक्सन्स ऑफ द इन्स्टीट्युट ऑफ ज्योग्राफर्स इण्डिया, अंक–1,(1) और (2): 31–40।

मैठाणी, डी. डी., प्रसाद, गायत्री एण्ड नौटियाल, राजेश, (2015). उत्तराखण्ड का भूगोल, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, 1–287।

PURVA MIMAANSA